आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र की विद्यालयी शिक्षा में प्रासंगिकता

शशि रंजन*
शिरीष पाल सिंह**

शिक्षा में आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र एक परिवर्तन आधारित दृष्टिकोण है। विद्यार्थियों की आलोचनात्मक चिंतन क्षमता को बढ़ावा देना और एक न्यायपूर्ण समाज के लिए उसे अच्छा नागरिक बनाना शिक्षण के सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्यों में से एक है। अध्यापक द्वारा कक्षा में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के दौरान विद्यार्थियों में न्याय और समानता के मूल्यों को विकसित करना चाहिए। आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र एक महत्वपूर्ण शिक्षण-अधिगम रणनीति है, जिसे न्याय और सामाजिक समानता के बारे में विद्यार्थियों की जागरूकता को मज़बूत करने तथा अपने ज्ञान में सुधार करने के लिए अभिकल्पित किया गया है। यह सिद्धांत शिक्षा को ज्ञान के हस्तांतरण से परे मानता है और भविष्य की श्रम शक्ति को प्रशिक्षित एवं उसकी आलोचनात्मक चेतना को विकसित करने के लिए अनुकूल वातावरण का सृजन करता है। आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र शिक्षा और सामाजिक आंदोलन का एक दर्शन है, जिसने आलोचनात्मक सिद्धांत और संबंधित परम्पराओं से शिक्षा के क्षेत्र और संस्कृति के अध्ययन में नई अवधारणाओं को विकसित और लागू किया है। यह लेख पाउलो फ्रेरे के दर्शन पर केंद्रित है तथा उनके आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र की वर्तमान शिक्षा में प्रासंगिकता पर विस्तृत चर्चा करता है।

विद्यालयी शिक्षा की समकालीन धारणाओं का केंद्र बिंदु ज्ञान का सृजन करना और विद्यार्थियों की आलोचनात्मक चिंतन क्षमता को बढ़ाना है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में अध्यापकों की प्रभावशीलता को विद्यार्थियों की उपलब्धि एवं निष्पादन से मापा जाता है। अधिकांश सर्वे में शोध अध्ययन दर्शाते हैं कि अध्यापक विद्यार्थियों को सीखने में सार्थक रूप से जोड़ने में कम रुचि दिखाते हैं। प्राय: अध्यापक कक्षा को नियोजित एवं विद्यार्थियों को अच्छे अंक प्राप्त करने में मदद करने हेतु विभिन्न रणनीतियों की तलाश करते हैं। परंतु उनकी आलोचनात्मक चिंतन क्षमताओं, मानदंडों, मूल्यों को बढ़ाने या समग्र सकारात्मक व्यवहार परिवर्तन लाने के लिए कम प्रयास करते हैं। इस प्रकार के शिक्षण-अधिगम द्वारा विद्यार्थियों को तैयार करना फ्रेरे की शिक्षा की बैंकिंग अवधारणा के समान है जो एक अध्यापक केंद्रित शिक्षा का द्योतक है जिसमें विषय-वस्तु को याद रखना प्राथमिक रणनीति है।

लेकिन फ्रेरे और कई अन्य विद्वान, जैसे—डीवी, ग्राम्स्की आदि ने ज्ञान को स्थानांतरित करने

**शोधार्थी*, शिक्षा विभाग, शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र 442001
***प्रोफेसर*, शिक्षा विभाग, शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र 442001

की प्रवृत्ति को बदलना चाहा और विभिन्न विद्यार्थी केंद्रित गतिविधियों जैसे संवाद और समस्या-समाधान विधि के माध्यम से ज्ञान के सृजन हेतु तर्क दिए। फ्रेरे ने विद्यार्थी-केंद्रित रणनीतियों को आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र के रूप में परिभाषित किया (उद्दीन, 2019)। इसका उद्देश्य उत्पीड़ित लोगों को मुक्ति दिलाना है। भारतीय उपनिषदों में भी कहा गया है— 'सा विद्या या विमुक्तये' अर्थात विद्या वह है जो मुक्ति प्रदान करे। जहाँ विद्या से तात्पर्य शिक्षा से है एवं मुक्ति से तात्पर्य अंधविश्वास, दासता, अज्ञान, अन्याय और उत्पीड़न से छुटकारा दिलाना है। इस प्रकार शिक्षा से ही मनुष्य उपर्युक्त बाधाओं से मुक्ति पा सकता है (पंडित, 2007)। शिक्षा का कार्य विद्यार्थियों की भाषा, अनुभव और कौशलों का निर्माण करना है न कि उन पर अध्यापकों की संस्कृति को थोपना है। फ्रेरे का दर्शन गरीब और उत्पीड़ित लोगों के सामने प्रगाढ़ सम्मान और विनम्रता से शुरू होता है, यह सम्मान और विनम्रता अध्यापक (जो भी सिखाता है) और विद्यार्थी (जो भी सीखता है) के बीच विश्वास और संप्रेषण की स्थिति को बढ़ावा देता है जिसमें शिक्षा एक सामूहिक गतिविधि बन जाती है और अध्यापक द्वारा दिए जाने वाले व्याख्यान के बजाए संवाद में प्रतिभाग करने से एक-दूसरे को लाभ होता है (उपाध्याय, 1996)। इस प्रकार वास्तविक शिक्षण तब होता है जब अध्यापक और विद्यार्थी के बीच परस्पर सम्मान, समझ और संवाद हो। साथ ही, विद्यार्थियों के अनुभवों, भावनाओं और ज्ञान को भी चुनौती दी जानी चाहिए तथा सार्थक रूप से सीखने के लिए अध्यापक द्वारा मार्गदर्शित किया जाना चाहिए।

आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र क्या है?

आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र विद्यार्थियों की आलोचनात्मक चिंतन क्षमता को बढ़ाने और उनके जीवन एवं व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए एक प्रभावी रणनीति है। यह एक ऐसी रणनीति है जो विद्यार्थियों में चेतना, समझ और निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ाती है। यह शिक्षणशास्त्र विद्यार्थियों को कक्षा में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए अवसर प्रदान करता है। यह शिक्षणशास्त्र एक ऐसी अवधारणा है जिससे शिक्षा प्रणाली की समस्या का समाधान किया जाता है। विद्यार्थियों की शिक्षा के लिए एक ज़िम्मेदार अध्यापक के साथ संवाद किया जाना चाहिए। फ्रेरे ने विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षा के लिए यह तर्क दिया कि शिक्षण प्रक्रिया में अध्यापक और विद्यार्थी के बीच बातचीत या संवाद एवं समस्या-समाधान विधि का प्रयोग किया जाना चाहिए। संवाद-आधारित दृष्टिकोण का तात्पर्य विद्यार्थियों को विचारों के आदान-प्रदान में शामिल करना, खोज-बीन करना एवं सीखने से है। समस्या-समाधान विधि को इस प्रकार से अभिकल्पित किया गया है कि विद्यार्थी किसी भी समस्या का समाधान विचारावेश (ब्रेनस्टॉर्मिंग) के माध्यम से कर सकें। जॉन डीवी ने विद्यार्थी को एक अच्छा नागरिक बनाने के लिए विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षा के लिए तर्क दिया है। इसलिए आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को सीखने में शामिल करना और उन्हें सक्रिय विद्यार्थी बनाना है।

आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र का महत्व

शिक्षा में आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र का उद्देश्य एक न्यायपूर्ण समाज बनाना है। फ्रेरे की इस विचारधारा

का अभिप्राय लोगों को सामाजिक और सांस्कृतिक आधिपत्य से मुक्त कराना था, न कि राजनीतिक सत्ता पर कब्ज़ा करना था। उन्होंने निरक्षर किसानों को अपनी मौन संस्कृति को तोड़ने के लिए प्रेरित किया एवं विद्यार्थियों की आलोचनात्मक जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए कक्षा में विभिन्न अंत:क्रियात्मक शिक्षण रणनीतियों (जैसे— संवाद, समस्या-समाधान) की एक विस्तृत विविधता को अनुकरण करने का आग्रह किया (उद्दीन, 2019; ब्रयूइंग, 2005)। फ्रेरे इस शिक्षणशास्त्र के माध्यम से गरीबों और उत्पीड़ितों के लिए मुक्ति की वकालत करते हैं। उनका कहना है कि विद्यालयों को ऐसा स्थान बनाया जाए जहाँ सामाजिक परिवर्तन और विकास किया जा सके। विद्यालयों को न केवल विद्यार्थियों के बीच आलोचनात्मक चिंतन को बढ़ावा देना चाहिए बल्कि उन्हें यह भी सिखाना चाहिए कि आस-पास के वातावरण को कैसे बदला जाए। जहाँ एक ओर फ्रेरे की धारणा उत्पीड़ित लोगों को जगाने के लिए थी, जिससे उन्हें समझने में मदद मिले कि उनका उत्पीड़न हो रहा है। वहीं दूसरी ओर, फ्रेरे ने यह भी प्रयास किया कि उत्पीड़कों को यह एहसास हो कि वे दलितों पर अत्याचार कर रहे हैं। फ्रेरे एक ऐसा समाज चाहते थे जहाँ हर व्यक्ति को समान अधिकार और अवसर मिले। इस प्रकार उन्होंने एक ऐसी शिक्षा की वकालत की जो उत्पीड़ितों को सशक्त बनाए और उत्पीड़कों को सामाजिक न्याय की समझ प्रदान करे (टिम्पसन, 1988)।

'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' के परिप्रेक्ष्य में आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र के बारे में स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि पूर्व विद्यालयी अवस्था में खेल-खेल और गतिविधि आधारित शिक्षणशास्त्रीय शैली को अपनाया जाए ताकि संवादात्मक कक्षा शैली के द्वारा अध्ययन-अध्यापन कार्य को प्रोत्साहन मिले। माध्यमिक अवस्था में अनुभव आधारित शिक्षण को प्रोत्साहन दिया जाए। सभी स्तरों की शिक्षा विधि का समग्र केंद्र बिंदु शिक्षा प्रणाली को रटने की प्रथा से वास्तविक समझ की ओर ले जाना है (*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020,* पृष्ठ संख्या 17)। नीति में बताया गया है कि आलोचनात्मक चिंतन को बढ़ावा देने हेतु शिक्षण और सीखना अधिक संवादात्मक तरीके से संपन्न करना होगा, कक्षा में विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा, जिससे अधिगम नियमित रूप से अधिक रुचिकर, सहयोगात्मक, खोजपूर्ण गतिविधि पर आधारित होगा ताकि विद्यार्थी अधिक गहन और प्रायोगिक तरीके से सीख सकेंगे *(राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020,* पृष्ठ संख्या 18)। यह नीति उल्लेख करती है कि विद्यार्थियों में अवधारणात्मक समझ को विकसित करने का प्रयास किया जाएगा और पहले से चली आ रही परीक्षा के लिए रटंत पद्धति को समाप्त करने का प्रयास किया जाएगा जिससे विद्यार्थियों में रचनात्मकता, तार्किक चिंतन एवं तार्किक निर्णय लेने की क्षमता का विकास हो सकेगा। आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र के माध्यम से विद्यार्थियों में संवाद, सहयोग, सामूहिक कार्य एवं लचीलापन जैसे जीवन कौशल को विकसित किया जा सकता है। इसके लिए उन्हें स्थानीय संदर्भ की विविधताओं और स्थानीय वातावरण से जोड़ने का प्रयास किया जाना चाहिए।

आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र की कक्षा-शिक्षण में प्रासंगिकता

शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र के तत्वों के उपयोग के बारे में *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* (एन.सी.एफ़. 2005) में उपयुक्त एवं प्रभावी तरीके से अभिव्यक्त किया गया है और कहा गया है कि आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र से विद्यार्थियों को विभिन्न मुद्दों, जैसे— राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं नैतिक पक्षों के आलोक में आलोचनात्मक चिंतन करने का अवसर प्राप्त होता है जिससे यह ज्ञात होता है कि विद्यालयी शिक्षण के सभी आयामों में आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र को अपनाने की आवश्यकता है (एन.सी.एफ़. 2005)। शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर विकसित सीखने के प्रतिफलों की पूर्ति हेतु कक्षा-कक्ष में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को संचालित करने के लिए आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र को अपनाया जाना चाहिए। जब एक अध्यापक अपनी कक्षा में आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र को लागू करता है तो वह अपनी कक्षा का वातावरण लोकतांत्रिक ढंग से तैयार करता है जहाँ विद्यार्थी आपस में संवाद स्थापित करते हैं, एक-दूसरे के विचारों को जानते एवं समझते हैं। साथ ही, किसी भी प्रकार की स्थिति को समझने, उसके विषय में आलोचनात्मक चिंतन करने तथा उस यथास्थिति को चुनौती दे सकने में सक्षम होते हैं। इन सभी का अभ्यास, विद्यालय की संस्कृति और विद्यार्थियों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। जिससे सभी विद्यार्थी कक्षा के लोकतांत्रिक वातावरण में किसी भी यथास्थिति का सामना कर सकने एवं उस पर संवाद करने के उद्देश्य से आलोचनात्मक चिंतन करने में सक्षम होते हैं।

आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र को कक्षा शिक्षण में लागू करने एवं उसकी प्रासंगिकता को बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र के प्रमुख घटकों, जैसे— लोकतांत्रिक वातावरण, अभ्यास, संवाद, आलोचनात्मक चिंतन, समस्या-समाधान, यथास्थिति को चुनौती देना एवं वास्तविक परिस्थितियों को शिक्षण कार्य के दौरान अध्यापक द्वारा अपनी पाठ-योजना में शामिल किया जाना चाहिए। आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र में अभ्यास का विशेष महत्व है। अभ्यास (प्रैक्टिस) में कार्यवाही और चिंतन दोनों शामिल होते हैं। यह एक अमूर्त विचार (सिद्धांत) या एक अनुभव के साथ शुरू होता है और उस विचार या अनुभव पर चिंतन को शामिल करता है जो उद्देश्यपूर्ण कार्यवाही में बदल जाता है। शिक्षा में प्रैक्टिस का मुख्य उद्देश्य सिद्धांत और परिवर्तनकारी कार्यवाही की खाई को पाटना है जिससे मानव अस्तित्व को प्रभावशाली तरीके से परिवर्तित किया जा सकता है (ब्रयूइंग, 2006; गुर्जे, 1998)। अभ्यास चिंतनशील, आलोचनात्मक और संवादपूर्ण कार्यवाही के माध्यम से दुनिया को बदलने का प्रयास करता है (रोबर्ट्स, 2000)। प्रैक्टिस के माध्यम से विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन को जागृत किया जाता है, जैसे— किसी विषय पर विद्यार्थियों को ऐसी परिस्थिति दी जाती है जिसमें वह स्वयं समस्या की पहचान करता है तथा उस समस्या का विश्लेषण करने में सक्षम होता है। तत्पश्चात उत्पन्न समस्याओं के

समाधान हेतु कार्य योजना बनाता है जिसके माध्यम से समस्या के समाधान तक पहुँचता है। कार्य योजना निर्माण के बाद उसे लागू किया जाता है जिससे यह ज्ञात होता है कि उसके द्वारा बनाई गई कार्य योजना उत्पन्न समस्या के लिए कारगर सिद्ध है अथवा नहीं। इसके लिए प्रैक्टिस के अंतिम चरण अर्थात कार्य योजना का विश्लेषण एवं कार्यवाही का मूल्यांकन करना आवश्यक है। आलोचनात्मक प्रैक्टिस एक चक्रीय प्रक्रिया है, जिसे चित्र 1 के माध्यम से दर्शाया गया है (राजेश, 2014)।

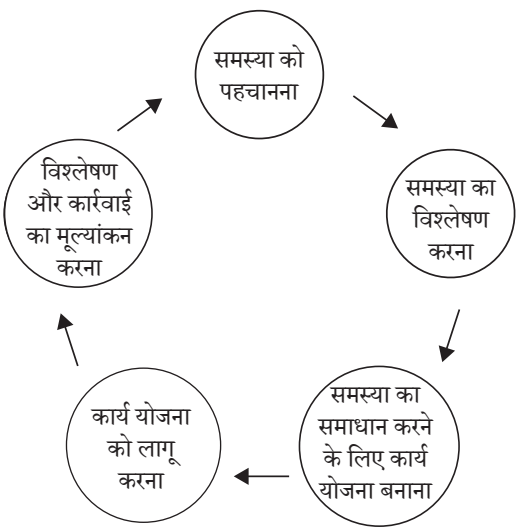

चित्र 1— आलोचनात्मक प्रैक्टिस की चक्रीय प्रक्रिया

आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र का कक्षा-कक्ष में अनुप्रयोग

आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र को कक्षा में लागू करते समय अध्यापक को आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र से संबंधित पाठ योजना का निर्माण एवं क्रियान्वयन करने के लिए तीन अवस्थाओं को ध्यान में रखना होता है। जिसके अंतर्गत विषय उत्पन्न करना (जनरेटिंग थीम), अकादमिक विषय (अकेडमिक थीम) एवं रचनात्मक कार्यवाही अवस्था (क्रिएटिव एक्टिव फेज) संबंधित प्रश्नों का निर्माण करना होता है। साथ ही, परियोजना कार्य के रूप में गृह कार्य विद्यार्थियों को प्रदान किया जाता है जिससे विद्यार्थी अपने आस-पास के परिवेश एवं संस्कृति को समझने में सक्षम होते हैं एवं किसी भी प्रकार की उत्पन्न हुई स्थिति से सामना करने हेतु स्वयं को तैयार करते हैं। आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र संबंधित पाठ योजना का निर्माण करते समय एक अध्यापक को शिक्षण गतिविधियों में सर्वप्रथम विषय उत्पन्न कराने हेतु विद्यार्थियों से ऐसे प्रश्न पूछे जाते हैं जिसमें विद्यार्थी आलोचनात्मक रूप से चिंतन करते हुए आपसी संवाद स्थापित करते हैं। इसके लिए अध्यापक द्वारा कक्षा का वातावरण लोकतांत्रिक रूप से तैयार किया जाता है जिसमें सभी विद्यार्थी स्वतंत्र रूप से संवाद स्थापित करने में सहज महसूस करते हैं। उदाहरणस्वरूप, अध्यापक यदि राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार द्वारा विकसित सामाजिक विज्ञान विषय के अंतर्गत *हमारी अर्थव्यवस्था* (भाग 1), कक्षा 9 के लिए पाठ्यपुस्तक में निहित अध्याय 3 'गरीबी' के बारे में पढ़ाना चाहता है तो उसे सर्वप्रथम अवधारणा मानचित्र तैयार करना होता है जैसा कि चित्र 2 में दर्शाया गया है। तत्पश्चात आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र आधारित पाठ योजना का निर्माण तालिका 1 के अनुसार किया जाता है।

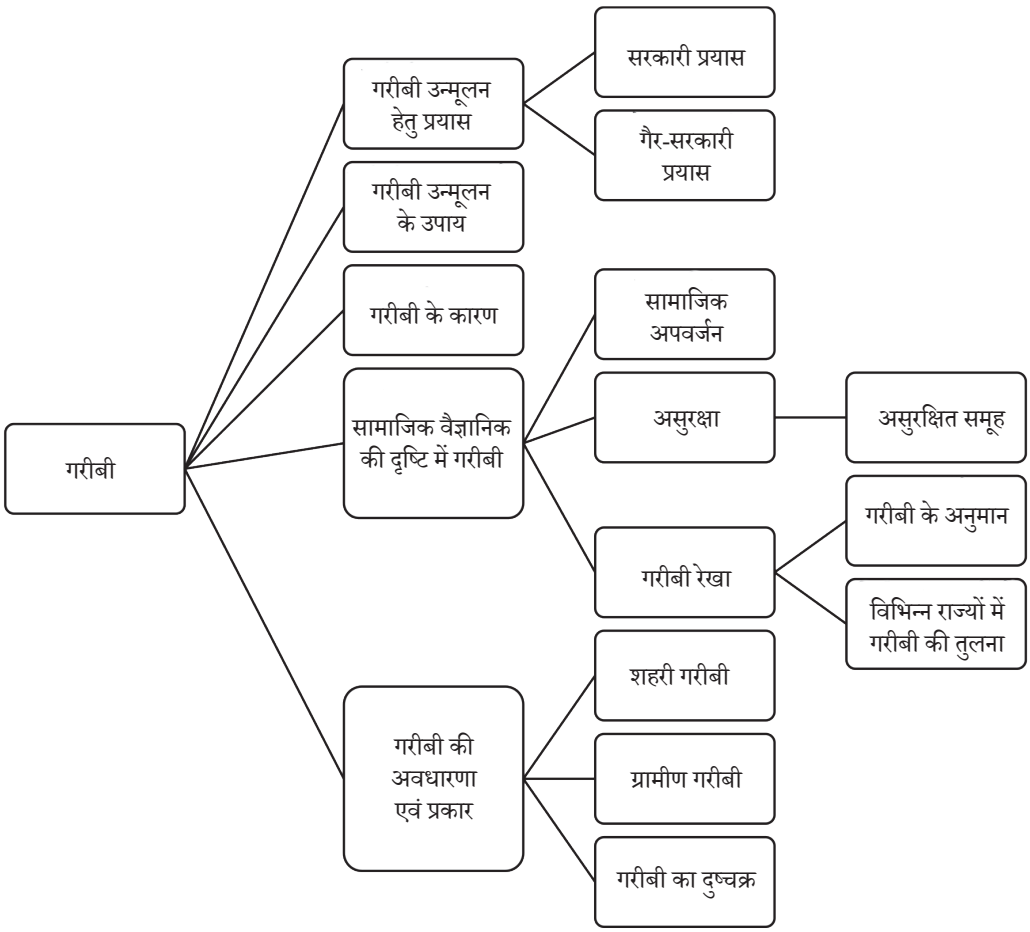

चित्र 2— अवधारणा मानचित्र (कॉन्सेप्ट मैप)

तालिका 1— आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र आधारित पाठ योजना
(गरीबी की अवधारणा एवं प्रकार)

अवस्था	शिक्षण गतिविधियाँ	विद्यार्थी प्रतिक्रियाएँ	आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र के घटक	आलोचनात्मक प्रैक्टिस
विषय उत्पन्न करना (जनरेटिंग थीम)	अध्यापक— कक्षा के सभी विद्यार्थियों को चार समूहों में विभक्त होने के लिए कहता है और प्रत्येक समूह में गरीबी आधारित दो विशिष्ट मामले (शहरी और ग्रामीण गरीबी संबंधित कहानी पाठ्यपुस्तक से) का स्व-अध्ययन करने के लिए कहता है। साथ ही, समूहवार संप्रत्यय आधारित प्रश्नों की रचना करने के लिए कहता है और अन्य समूहों के साथ चर्चा करने के लिए कहता है। अध्यापक— कक्षा में विभक्त विद्यार्थियों के प्रत्येक समूह को यह कार्य दिया जाता है कि वह अपने आस-पास के परिवेश से गरीबी में जीवनयापन करने वाले परिवारों को चिह्नित करें और उसके बाद उनसे यह पूछा जाता है कि किन-किन तत्वों को आधार बनाकर उन्होंने उन परिवारों को गरीब चिह्नित किया है।	विद्यार्थी— समूह में गरीबी आधारित विशिष्ट मामले (शहरी और ग्रामीण गरीबी) का अध्ययन करते हैं। प्रश्नों की रचना करते हैं, जैसे— शहरी और ग्रामीण गरीबी में क्या भिन्नता है? उनके निवास स्थान के आस-पास किस प्रकार की गरीबी है? गरीबी के कारण क्या-क्या हो सकते हैं? अध्ययन के उपरांत उत्पन्न समस्या पर अन्य समूहों के साथ वाद विवाद करते हैं। विद्यार्थी— वह अपने आस-पास के परिवेश से गरीबी में जीवनयापन करने वाले परिवारों को चिह्नित करता है। परिवार गरीब क्यों हैं? इसे चिह्नित करने के कारणों के बारे में बताता है जिसके अंतर्गत यह प्रतिक्रिया व्यक्त करता है— 1. अपने बच्चों को स्कूल भेजने के लिए पैसे नहीं हैं। 2. पूरे परिवार के लिए तीन वक्त का भोजन उपलब्ध नहीं है। 3. रहने के लिए व्यवस्थित घर नहीं है। उपर्युक्त प्रकार के उत्तर आने की प्रबल संभावना है।	संवाद, सम्प्रेषण	समस्या की पहचान करना। समस्या का विश्लेषण करना।

अकादमिक विषय (अकेडमिक थीम)	अध्यापक— गरीबी संप्रत्यय आधारित और गहन जानकारी हेतु विद्यार्थियों को गरीबी की भिन्न-भिन्न परिस्थितियों का एक संयुक्त चित्र दिखाते हैं और उनसे कहते हैं कि इस संयुक्त चित्र का अवलोकन कर चित्र से संबंधित एक-एक वाक्य लिखिए और सभी चित्र को सम्मिलित करते हुए पाँच से छह पंक्तियों का एक निबंध/कहानी लिखिए। साथ ही, इस विषय पर तार्किक विचार प्रकट करने के लिए कहते हैं। साथ ही विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत किए गए कल्पनात्मक निबंध के बारे में अन्य विद्यार्थियों से यह पूछा जाता है कि यह निबंध आपके वास्तविक जीवन से किस प्रकार संबंधित है।	विद्यार्थी— गरीबी आधारित संयुक्त चित्र को देखते हुए उस चित्र पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए गरीबी की विभिन्न अवस्थाओं का उल्लेख करते हैं। • उनके पास रहने के लिए घर नहीं हैं। • अपने बच्चों को स्कूल भेजने के लिए पैसे नहीं है। • भर पेट खाने के लिए भोजन उपलब्ध नहीं है। • उनके पास नियमित रोज़गार की कमी है। • अपनी ज़मीन नहीं है। कुछ विद्यार्थी संयुक्त चित्र का अवलोकन कर प्रत्येक चित्र को सम्मिलित करते हुए एक छोटी कहानी लिखते हैं। विद्यार्थी— निबंध के आधार पर अपने आस-पास घटित हो रही घटना के आधार पर वर्णन करते हुए बताते हैं कि रमेश (काल्पनिक नाम) के पास न तो अपनी ज़मीन है और न ही उसके पास रहने के लिए घर है। वह रात में पंचायत भवन के बरामदे में सोता है और अपने बच्चों को ईंट के भट्टे (चिमनी) पर काम करने के लिए भेजता है तथा उसकी पत्नी लोगों के घर जाकर बर्तन साफ़ करने का काम करती है।	क्रियाकलाप या गतिविधि आधारित अधिगम तार्किक चिंतन, कल्पनात्मक सोच वास्तविक जीवन से अधिगम को जोड़ना यथास्थिति को चुनौती देना आलोचनात्मक चिंतन	समस्या का समाधान करने के लिए कार्य योजना बनाना। कार्य योजना को लागू करना।

	अध्यापक— गरीबी के दुष्चक्र को किस प्रकार खंडित किया जा सकता है? इसके लिए एक योजना बनाइए तथा उसे अपनी कक्षा में नुक्कड़ नाटक के माध्यम से प्रस्तुत कीजिए कि किस प्रकार गरीबी के चंगुल से निकाला जा सकता है?	विद्यार्थी— गरीबी के दुष्चक्र को खंडित करने के लिए एक योजना बनाते हैं और उसे कक्षा में नुक्कड़ नाटक के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं कि जो गरीब हैं उन्हें रोज़गार के साधन मुहैया कराते हैं, उनके बच्चों को अच्छी शिक्षा की सुविधा उपलब्ध कराते हैं। साथ ही सरकारी प्रयासों के अंतर्गत मनरेगा (...) कार्यक्रमों के आधार पर रोज़गार देना एवं गैर-सरकारी प्रयासो के अंतर्गत स्वयं सहायता समूह के माध्यम से स्वरोज़गार आदि बातों का उल्लेख करते हैं। अत: उक्त प्रयासों से गरीबी के दुष्चक्र को खंडित किया जा सकता है।		
रचनात्मक कार्यवाही अवस्था (क्रिएटिव एक्शन फेज)	अध्यापक द्वारा विद्यार्थियों से कुछ प्रश्न पूछे जाते हैं ताकि विद्यार्थी आलोचनात्मक चिंतन कर सकें— गरीबी की माप हेतु सूचकांक गरीबी को मापने में किस सीमा तक सफल हैं? अपनी आलोचनात्मक एवं तार्किक समझ युक्त प्रतिक्रिया दीजिए।	विद्यार्थी— गरीबी की माप के लिए सूचकांक द्वारा सामाजिक अपवर्जन, असुरक्षा और गरीबी रेखा आदि का प्रयोग किया जाता है, जिसके अंतर्गत— भारत में जाति-व्यवस्था की कार्यशैली है, जिसमें कुछ जाति के लोगों को समान अवसरों से अपवर्जित किया जाता है। सभी लोगों के लिए चाहे कोई प्राकृतिक आपदा, जैसे— कोविड-19, बाढ़, भूकंप या रोज़गार की उपलब्धता में कमी आदि से प्रभावित होने की संभावना का निरूपण ही असुरक्षा है। इस प्रकार यह देखा जाए तो सामाजिक दृष्टिकोण से गरीबी के माप के लिए यह विधि उपयुक्त है, जैसे उत्तर आने की सम्भावना है।	आलोचनात्मक चिंतन स्थानीय ज्ञान के आधार पर नवीन ज्ञान का सृजन	विश्लेषण और कार्यवाही का मूल्यांकन करना।

	गरीबी लोगों के जीवन को किस प्रकार प्रभावित करती है? अपने आलोचनात्मक विचार प्रस्तुत करें।	विद्यार्थी— गरीबी लोगों के जीवन के स्तर को निम्न तरीके से प्रभावित करती है, जिसके अंतर्गत— गरीबी के कारण व्यक्ति को अच्छा भोजन, पहनने के लिए अच्छे कपड़े, शिक्षा, रहने के लिए व्यवस्थित घर आदि उपलब्ध नहीं हो पाते हैं। लोगों का जीवन स्तर निम्न रहता है। गरीबी के कारण अच्छी चिकित्सा सुविधा प्राप्त नहीं हो पाती, फलस्वरूप वे ज़्यादातर बीमार रहते हैं। उनकी आय में वृद्धि के बजाय कमी हो जाती है। जिसका प्रभाव हमारे देश की अर्थव्यवस्था पर भी पड़ता है और देश की उत्पादकता निम्न रहती है। जिसका प्रभाव प्रति व्यक्ति वास्तविक आय पर भी पड़ता है।		

गृह कार्य

आप अपने आस-पड़ोस (ग्रामीण परिवेश) का अवलोकन करें और कोई ऐसे परिवार (उस परिवार का वास्तविक नाम उल्लेख न कर, काल्पनिक रूप से उल्लेख करें) का वर्णन करें, जो गरीब हो, वह गरीबी के दुष्चक्र में किस प्रकार से घिरा हुआ है और उसकी गरीबी को मापने के लिए आपने गरीबी की माप के कौन-से सूचकांक का उपयोग किया?

आलोचनात्मक शिक्षाणशास्त्र के माध्यम से गरीबी संप्रत्यय के शिक्षण-अधिगम में विद्यार्थी सर्वप्रथम गरीबी संप्रत्यय से संबंधित दो विशिष्ट मामलों का अध्ययन करते हैं। जिसमें वह संवाद एवं संप्रेषण जैसी प्रक्रिया को अपनाते हैं तथा प्रैक्टिस के प्रथम चरण में समस्या की पहचान करने की प्रक्रिया करते हैं कि गरीबी क्या है? इसका स्वरूप किस प्रकार का है? तत्पश्चात विद्यार्थी गरीबी के कारणों को आलोचनात्मक रूप से विश्लेषण करते हुए चिह्नित करते हैं जिसमें वे प्रैक्टिस के द्वितीय चरण, समस्या का विश्लेषण प्रक्रिया का प्रयोग करते हैं जिससे उनमें आलोचनात्मक चिंतन जागृत होता है। समस्या के विश्लेषण के उपरांत विद्यार्थी क्रियाकलाप या गतिविधि आधारित अधिगम के अंतर्गत गरीबी संप्रत्यय से संबंधित एक कहानी या निबंध लिखते हैं। इसके परिणामस्वरूप उनमें तार्किक चिंतन एवं कल्पनात्मक सोच विकसित होती है एवं विद्यार्थी अपने आस-पास घटित हो रही घटना का वर्णन करते हुए गरीबी के संप्रत्यय को समझते हैं। इस प्रकार वे इस अधिगम को वास्तविक जीवन से जोड़ते हैं।

तत्पश्चात प्रैक्टिस के तृतीय चरण में गरीबी के दुष्चक्र को किस प्रकार खंडित किया जाए इसके समाधान हेतु विद्यार्थी कार्य योजना बनाते हैं। जिसमें वह आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र के घटक यथास्थिति को चुनौती देना एवं समस्या के समाधान हेतु योजना निर्मित करते हैं। प्रैक्टिस के चतुर्थ चरण में गरीबी के दुष्चक्र से निकलने के लिए उनके द्वारा बनाई गई योजना को लागू किया जाता है। प्रैक्टिस के अंतिम चरण में उनके द्वारा लागू की गई कार्य योजना का विश्लेषण एवं मूल्यांकन किया जाता है जिससे उन्हें यह ज्ञात होता है कि उनके द्वारा बनाई गई कार्य योजना उत्पन्न समस्या के समाधान के लिए उपयुक्त है अथवा नहीं।

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर यह स्पष्ट पता चलता है कि जब एक अध्यापक अपनी कक्षा में आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र को लागू करता है तो वह विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन एवं तर्कशक्ति को बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रश्न उपयोग करता है, इसके आधार पर वह अपनी पाठ योजना का विकास करता है। साथ ही, प्रैक्टिस में दी गई विभिन्न अवस्थाओं का उपयोग करते हुए पाठ-योजना के निष्कर्ष पर पहुँचते हैं, जहाँ आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र के उन सभी पक्षों का उपयोग करके एक अध्यापक विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन की क्षमताओं का विकास कर सकता है। इस प्रकार की गतिविधियों के क्रियान्वयन से कक्षा का वातावरण लोकतांत्रिक एवं शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया विद्यार्थी के वास्तविक जीवन से जुड़े होते हैं। साथ ही, विद्यार्थी स्वतंत्र रूप से संवाद करते हैं जिससे उनमें आलोचनात्मक चिंतन जागृत होता है।

निष्कर्ष

आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र के माध्यम से शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के दौरान विद्यार्थी तथ्यों का आलोचनात्मक तरीके से चिंतन करते हैं। किसी परिस्थिति या समस्या का विश्लेषण करने के उपरांत योजनाबद्ध तरीके से समस्या के समाधान प्राप्त करने में सक्षम होते हैं। आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र शिक्षार्थियों को न सिर्फ़ कक्षा-कक्ष में उत्पन्न की गई चुनौतियों का सामना करने हेतु तैयार करता है, अपितु वास्तविक जीवन में व्याप्त या उत्पन्न समस्या एवं चुनौतियों से स्वयं या समाज को उबारने में भी सक्षम बनाता है। आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र विद्यार्थियों में तर्क एवं संवाद करने की क्षमता का विकास करता है। जिससे वे किसी तथ्य या परिस्थिति के आलोचनात्मक पक्ष तक पहुँचते हैं, जो उन्हें अधिक चिंतनशील एवं तार्किक बनाने में सहायक होता है। निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि एक अध्यापक को अपनी कक्षा में आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र को लागू करना चाहिए, जिसमें आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र के सभी घटक शामिल हों। अध्यापक को यह ध्यान रखना चाहिए कि कक्षा का वातावरण लोकतांत्रिक हो जहाँ विद्यार्थी स्वतंत्र रूप से संवाद कर सकें और किसी भी समस्या पर आलोचनात्मक चिंतन कर सकें। अध्यापक विद्यालय में आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र को लागू कर विद्यार्थियों को भविष्य में आने वाली चुनौतियों के लिए तैयार करते हैं जहाँ विद्यार्थी किसी भी प्रकार के उत्पीड़न से स्वयं को मुक्त कर सकें अथवा कोई उत्पीड़न न करे। अर्थात न कोई उत्पीड़क हो न कोई उत्पीड़ित हो— सभी लोकतांत्रिक रूप से मुक्त जीवनयापन करने में सक्षम हों।

संदर्भ

उद्दीन, एम. एस. 2019. क्रिटिकल पेडागोजी एंड इट्स इम्प्लीकेशन इन द क्लासरूम. *जर्नल ऑफ अंडररिप्रेजेंटेड एंड माइनॉरिटी प्रोग्रेस*. 3(2), 109–119.

उपाध्याय, आर. 1996. *उत्पीड़ितों का शिक्षाशास्त्र* (अनुवाद संस्करण). पृष्ठ संख्या 69–84. ग्रन्थ शिल्पी प्रकाशन, नई दिल्ली.

गुर्जे, आई. 1998. टुवर्ड ए नॉनरेप्रेसिव क्रिटिकल पेडागोजी. *एजुकेशनल थ्योरी*. 48(4), पृष्ठ संख्या 463–486.

टिम्पसन, डब्ल्यू. एम. 1988. पाउलो फ्रेरे— एडवोकेट ऑफ लिटरेसी थ्रू लिबरेशन. *एजुकेशनल लीडरशिप*. पृष्ठ संख्या 62–66.

पंडित, एस. 2007. शिक्षा की मुक्ति का सवाल उठाती एक किताब— समीक्षा. *शिक्षा-विमर्श*. पृष्ठ संख्या 30–32.

ब्रयूइंग, एम. 2005. टर्निंग एक्सपेरीयंशल एजुकेशन एंड क्रिटिकल पेडागोजी— थ्योरी इंटू प्रैक्टिस. *जर्नल ऑफ एक्सपेरीयंशल एजुकेशन*. पृष्ठ संख्या 28(2), पृष्ठ संख्या 106–122

———. 2006. *क्रिटिकल पेडागोजी ऐज प्रैक्टिस— थीसिस*. पृष्ठ संख्या 29–30. फैकल्टी ऑफ एजुकेशन, लाकेहेड यूनिवर्सिटी.

मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. पृष्ठ संख्या 17–18. नई दिल्ली, भारत सरकार.

राजेश, आर.वी. 2014. *ए स्टडी ऑन द इफेक्टिवनेस ऑफ क्रिटिकल पेडागोजिकल अप्रोच इन सोशल स्टडीज एट सेकंड्री लेवल*. थीसिस. डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशन, एन.सी.ई.आर.टी., मैसूर.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली.

रोबर्ट्स, पी. 2000. *एजुकेशन लिटरेसी एंड ह्यूमनाइजेशन— एक्सप्लोरिंग द वर्क ऑफ पाउलो फ्रेरे*. ग्रीनवुड पब्लिशिंग ग्रुप.

https://images.app.goo.gl/izWkXfsEmbvFrGt88

https://images.app.goo.gl/khYsmCL1sEnuNdgD9

https://images.app.goo.gl/GS1yQJhc51fDzhds5

https://images.app.goo.gl/1GSVcVZ8HnaSdke7A

https://images.app.goo.gl/XFmgihc9A6XAaoPb9